भट्टारक रत्नकीर्ति

जैन साहित्य में रत्नकीर्ति नाम के आठ आचार्यों का परिचय मिलता है—

1. रत्नकीर्ति : अभयनन्दि के शिष्य—17वीं शताब्दी अभयचन्द्र के प्रशिष्य।
2. रत्नकीर्ति : जिनचन्द्र के शिष्य।
3. रत्नकीर्ति : भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य—विक्रम संवत् 1953
4. रत्नकीर्ति : धर्मचन्द्र के शिष्य—विक्रम संवत् 1296-1310
5. रत्नकीर्ति : सुरेन्द्रकीर्ति के शिष्य—विक्रम संवत् 1745
6. रत्नकीर्ति : ज्ञानकीर्ति के शिष्य—विक्रम संवत् 1535
7. रत्नकीति : ललितकीर्ति के शिष्य—विक्रम संवत् 1645-1683

भद्रबाहु चरित के रचयिता रत्नकीर्ति पूर्वोक्त सभी रत्नकीर्ति आचार्यों से भिन्न हैं। इनके गुरु ललितकीर्ति और दादागुरु अनन्तकीर्ति थे।

इनका समय विक्रम की 16वीं शती का उत्तरार्द्ध है।

रचना-परिचय : इनके द्वारा रचित एक ही रचना है—

1. भद्रबाहुचरित : इस ग्रन्थ में चार सर्ग हैं और उनमें भद्रबाहु का जीवनवृत्त वर्णित है। यह ग्रन्थ पुराणशैली में लिखा गया है, जिससे पाठकों का मन सहज रूप से लग जाता है।